MP Board Class 7th Notes Sanskrit Chapter 19 देशहिताय

देशहिताय हिन्दी अनुवाद

सुधीशः :
मित्र सिद्धार्थ! भवान् कस्यां कक्षायां पठति?

सिद्धार्थः :
अहं सप्तमकक्षायां पठामि। सुधीशः-एतद् वेशं धृत्वा
भवान् कुत्र गच्छति?

सिद्धार्थ :
मित्र! पश्यतु मम गणवेशम्। अहं बालचरः। अतः जनसेवायै एक ग्रामं गच्छामि।

सुधीशः :
'बालचरः' इत्युक्ते किं ज्ञायते?

सिद्धार्थः :
बालचरः इति बालानां एका सेवासंस्था अस्ति। तस्याः सदस्यः भूत्वा वयं देशसेवां कर्तुं समर्थाः भवामः।

अनुवाद :
सुधीश :
हे मित्र सिद्धार्थ! आप किस कक्षा में पढ़ते हो?

सिद्धार्थ :
मैं सातवीं कक्षा में पढ़ता हूँ। सुधीश-यह वेश धारण करके आप कहाँ जा रहे हो?

सिद्धार्थ :
मित्र! मेरे गणवेश को देखो। मैं बालचर हैं। इसलिए मनुष्यों की सेवा के लिए एक गाँव को जा रहा हूँ।

सुधीश :
'बालचर' इसके कहने से क्या ज्ञात होता है?

सिद्धार्थ :
'बालचर' नामक बालकों की एक सेवा संस्था है। उसके सदस्य बनकर हम देश सेवा करने में समर्थ होते हैं।

सुधीशः :
बालचरो भूत्वा भवान् किं किं करोति?

सिद्धार्थः :
गणवेशधारिणः वयं बालचराः सर्वत्र विचरामः। वयं देवालयेषु मेलापकेषु हट्टेषु जनसमूहेषु सामाजिकार्यक्रमेषु भूकम्पादि आपात्कालेषु च उत्साहेन जनानां साहाय्यं कुर्मः। प्रतिज्ञाः अपि अनुपालयामः।

सुधीशः :
काः ताः प्रतिज्ञाः?

सिद्धार्थः :
प्रथमा तु 'ईश्वरं स्वदेशं प्रति च कर्त्तव्यपालनं', द्वितीया तावत् 'सर्वेषां सहायता' तृतीया प्रतिज्ञा 'संस्थायाः अनुशासनस्य पालनम्' इति।

अनुवाद :
सुधीश :
बालचर होकर आप क्या-क्या करते हो?

सिद्धार्थ :
गणवेश धारण किये हुए हम सभी बालचर सर्वत्र घूमते हैं। हम सब मन्दिरों में, मेलों में, हाटों में (पैठ में), मनुष्यों की भीड़ में, सामाजिक कार्यक्रमों में और भूकम्प आदि आपातकाल में उत्साहपूर्वक मनुष्यों की सहायता करते हैं। प्रतिज्ञा का भी पालन करते हैं।

सुधीश :
वह कौन सी प्रतिज्ञा है?

सिद्धार्थ :
पहली (प्रतिज्ञा है) 'ईश्वर और अपने देश के प्रति कर्त्तव्य का पालन', दूसरी (प्रतिज्ञा है) 'सबकी सहायता करना', तीसरी (प्रतिज्ञा है) 'संस्था के अनुशासन का पालन करना।'

सुधीशः :
भवन्तं सेवायै कः प्रेरयति? सिद्धार्थः-देशस्तु मातृतुल्यः।
मातृसेवायै सर्वे समानयोग्याः। आत्मप्रेरणया एव देशसेवां
कुर्मः।

सुधीशः :
कथमहं देशसेवां कर्तुं शक्नोमि? के ते मार्गाः?

सिद्धार्थः :
देशसेवायाः बहवः मार्गाः सन्ति। छात्रजीवने 'राष्ट्रियछात्रसेना (एन.सी.सी.)' इति। 'राष्ट्रियसेवायोजना (एन.एस.एस.)' इति देशसेवामार्गौ। 'एकता अनुशासनञ्च' राष्ट्रियछात्रसेनायाः ध्येयवाक्यम् एवञ्च 'अहं न भवान्' इति राष्ट्रियसेवायोजनायाः ध्येयवाक्यमस्ति। एताभ्यां मार्गाभ्यां वयं व्यक्तित्वविकासेन सह समाजसेवां देशसेवां च कर्तुं शक्नुमः।

अनुवाद :
सुधीश-आपको सेवा करने के लिए कौन प्रेरणा देता है?

https://www.evidyarthi.in/

सिद्धार्थ :
देश तो माता के समान है। माता की सेवा के लिए सभी समान रूप से योग्य हैं (सक्षम हैं)। आत्मा से प्राप्त प्रेरणा से ही देश की सेवा करते हैं।

सुधीश :
मैं किस तरह देश सेवा कर सकता हूँ? वे कौन से उपाय हैं?

सिद्धार्थ :
देश सेवा के बहुत से योग्य उपाय हैं। विद्यार्थी जीवन में "राष्ट्रीय छात्र सेना (एन. सी. सी.)" होती हैं। 'राष्ट्रीय सेवायोजना' (एन. एस. एस.) देश सेवा के उपाय हैं। 'एकता और अनुशासन' राष्ट्रीय छात्र सेना का ध्येय वाक्य ही है और 'मैं नहीं आप' भी राष्ट्रीय सेवायोजना का ध्येय वाक्य हैं। इन दोनों उपायों से (मार्गों से) हम सभी व्यक्तित्व विकास के साथ ही समाजसेवा और देश सेवा करने में समर्थ हैं।

सुधीशः :
छात्रजीवनस्य अनन्तरं देशसेवायाः के मार्गाः?

सिद्धार्थः :
जल-वायु-स्थलसेना इति त्रिविधसेनाप्रकाराः देशसेवायाः एव मार्गाः सन्ति।

सुधीशः :
मित्र! एतासां सेनानां विषये किञ्चित् विवरणं ददातु।

सिद्धार्थः :
जलसेनायाः ध्येयवाक्यं 'शन्नोवरुणः' इति अस्ति। एषा जलमार्गात् देशरक्षां करोति। वायुसेना 'नभः स्पृशं दीप्तम्' इति ध्येयवाक्यं स्वीकृत्य आकाशमार्गात् देशं रक्षति। स्थलसेनायाः ध्येयवाक्यं-'सेवा अस्माकं धर्मः' इति। एषा स्थलात् देशरक्षणं करोति।

सुधीशः :
भवतु, ज्ञातं देशहितमार्गाणां विषयेः, किन्तु एतेषु कः भेदः।

सिद्धार्थः :
न कोऽपि भेदः। एते सर्वे जाति-धर्म-भाषाभेदरहिताः देशसेवायाः विभिन्नाः मार्गाः वर्तन्ते। सर्वेषामुद्देश्यं तु एकम् एव 'देशहितम्' इति।

अनुवाद :
सुधीश :
छात्र जीवन के बाद देशसेवा के कौन से उपाय हैं?

सिद्धार्थ :
जल सेना, वायु सेना तथा थल सेना, जो तीन प्रकार की सेना है, (वह भी) देशसेवा के उपाय हैं।

सुधीश :
हे मित्र! इन सभी सेनाओं के विषय में कुछ विवरण दीजिए।

सिद्धार्थ :
'जल सेना' का ध्येय वाक्य 'शन्नोवरुण:' (वरुण देवता हमारा कल्याण करे) है। यह जलमार्ग से देश की रक्षा करती है। वायुसेना 'नभः स्पृशं दीप्तम्' (आकाश प्रकाश से युक्त हो) इस ध्येय वाक्य को स्वीकार करके आकाशमार्ग से देश की रक्षा करती है। स्थल सेना (थल सेना) का ध्येय वाक्य है-'सेवा (ही) हमारा धर्म है।' यह स्थल से देश की रक्षा करती है।

सुधीश :
ठीक है, देश की भलाई के मार्गों (उपायों) के विषय में जानकारी मिली। किन्तु इनमें कौन सा भेद है?

सिद्धार्थ :
कोई भी भेद नहीं है। ये सभी जाति-धर्म और भाषा के भेद से रहित देश सेवा के विभिन्न मार्ग (उपाय) हैं। सभी का एक ही उद्देश्य 'देश की भलाई (कल्याण)' है।

देशहिताय शब्दार्थाः

धृत्वा = पहनकर। जनसेवायै = लोगों की सेवा के लिए। मेलापकेषु = मेलों में। हट्टेषु = बाजारों में। मातृतुल्यः = माता के समान।

https://www.evidyarthi.in/